सं. भो.वि./एफ.डी./188-84/6417.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० इण्डिया फोर्ज एण्ड ड्रापट स्टैम्पिंग लि॰, 13/3, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सुरेश चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की, धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं० 5415—3—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1958, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, कः विवादग्रत या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सुरेश चन्द की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 33/25 फरवरी, 1985

सं. स्रोतिन पानीपत/ 1.1-84/6917 — चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. बीड़ कोपरेटिव केंडिट एण्ड सर्विस सोसायटी लि०, घीड़, तह्साल एण्ड जिला करनाल, के श्रमिक श्री बाल किशन तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई स्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलियं, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवित्तयम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिधित्यम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादशस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से मुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री बाल फिशन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो वि./रोह*ार्य* । 46–84/6923.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. प्रशासक नगरपालिका, रोहतक, के श्रमिक श्री दाय चन्द तथा उसके प्रयन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीखोगिक विवाद है ;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकानी ग्रिधिसूचना सं० 3564-ए-एस. ग्री. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री विश्व चन्द की सैवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./रोहतक/242-84/6930.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. जैन सैरामिक्स, इन्डस्ट्रीज, नजफगढ़ रोड़, यहादु√गढ़, रोहतक, के श्रमिक श्री राक्षण जैन तथा उसके प्रवस्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनयम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए-एस. श्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणैय हें तु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों सथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत भयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री राकेश जैन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो. वि./रोहतक/239-84/6937.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 'मै. दीपक इन्टरनैशनल, झज्जर रोड़, बहादुरगढ़, रोहतक के श्रमिक श्री भगत सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणंय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, मन, भौद्योगिक विवाद मिन्नित्यम, 1947, की झारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं मिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिन्नित्यों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिन्नित्य में. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं. 3864-ए-एस. ग्री. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7 के मिन्नी गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि खक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत प्रथम सम्बन्धित मामला है:—-

क्या श्री भगत सिंह की सेवार्थों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 25 फ्रवरी, 1985

सं. मो.वि./रोहतक/2-84/7049.—चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मैनेजिंग डायरेक्टर, कोन्फेड, 1015/22-बी, चण्डीगढ़, (2) डिस्ट्रिक्ट मैनेजर, शान्फेड, रोहतक के श्रीमक श्री प्रताप सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाण। के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर. 1970 के साथ पठित सरकारी श्रधिसूचना सं. 3864-ए-एस. श्रो. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री प्रताप सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./रोहतक/6-85/7042.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है की मैं. मोहन स्पिनिंग मिल, रोहतक, के श्रीमक श्री बनजीन सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौबोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिनियों का प्रयोग करते हुए हिरयाणा के राज्यगाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पिठत सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए.-एस-श्रो (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो दिवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री बलजीत सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?